दिवाकर चित्रकथा

अंक 59

मूल्य 20.00

महाबल मलया सुन्दरी

प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल मलया सुन्दरी

किसी अनुभवी की उक्ति है—

जो ताकूं कांटा बुवै ताहि बोव तू फूल।
तुझे फूल का फूल है, वाकूं है तिरशूल।।

संसार का नियम है बुराई करने पर वह बुराई सौ गुनी लौटकर आती है और भलाई करने पर भलाई भी हजार गुनी बनकर आती है। आश्चर्य तो यह है कि इस सत्य-तथ्य को समझते हुए भी मानव दूसरों के लिए गड्ढा खोदता रहता है। वैर, द्वेष, ईर्ष्या आदि क्षुद्र भावों के वश मानव दूसरों का अनिष्ट करने का दुश्चक्र चलाता रहता है। किन्तु अन्त में परिणाम होता है जो शूल दूसरों के लिए बिछाये, वे उसी के पाँवों में चुभते हैं और त्रिशूल की तरह उसके हृदय को भेदते-वेधते-चीरते रहते हैं।

वीरधवल राजा की रानी चम्पकमाला बड़ी शीलवती धर्मपरायणा थी, तो दूसरी रानी कनकमाला कठोर स्वभाव की ईर्ष्यालु और सदा दूसरों का अहित करने की दुर्भावाना में जलती थी। चम्पकमाला की पुत्री मलया सुन्दरी भी अपनी माँ के समान शील, धर्म, सहिष्णुता आदि गुणों की जीवंत मूर्ति थी।

राजा सूरपाल का पुत्र **'मलयकुमार'** एक धर्मनिष्ठ, सदाचारी और परोपकारी वीर युवक था। महाबल मलया के जीवन-पथ में विमाता कनकमाला ने पग-पग पर उसे हर प्रकार से दुःख देने और कष्टों की आग में जलाने का प्रयत्न किया। किन्तु महाबल मलया जैसे धर्मनिष्ठ सदाचारी सत्पुरुषों ने उन शूलों को भी फूलों में बदल दिया। जीवन में आये तूफानी झंझावतों का साहस और सूझबूझ के साथ सामना किया। विमाता द्वारा किये गये सभी अपराध क्षमाकर महानता का परिचय दिया। एक ने नीचता करने में कमी नहीं रखी तो दूजे ने उदारता का परिचय देकर अपनी महानता को स्थापित किया। अन्त में महाबल-मलया सुन्दरी की नीति और धार्मिकता की जीत हुई।

इस अत्यन्त रोचक और प्रसिद्ध पौराणिक कथा के आधार पर श्रमण सन्मति मुनि जी म. 'साहिल' ने सरल, सहज भाषा में यह शब्दांकन किया है। मुनिश्री स्थानकवासी समाज के बहुश्रुत विद्वान् युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म. सा. के शिष्य श्री विनय मुनि जी म. के शिष्य हैं। आप एक कवि, गीतकार, प्रभावशाली वक्ता और क्रांतिकारी विचारक संत हैं।

—महोपाध्याय विनय सागर *—श्रीचन्द सुराना 'सरस'*

लेखक : श्रमण सन्मति मुनि जी म. 'साहिल'

सम्पादक : **श्रीचन्द सुराना 'सरस'**

प्रकाशन प्रबंधक : **संजय सुराना**

चित्रांकन : **सत्य प्रकाश तिवारी**

प्रकाशक

श्री दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. फोन : 0562-2851165

सचिव, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. फोन : 2524828, 2561876, 2524827

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International

For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

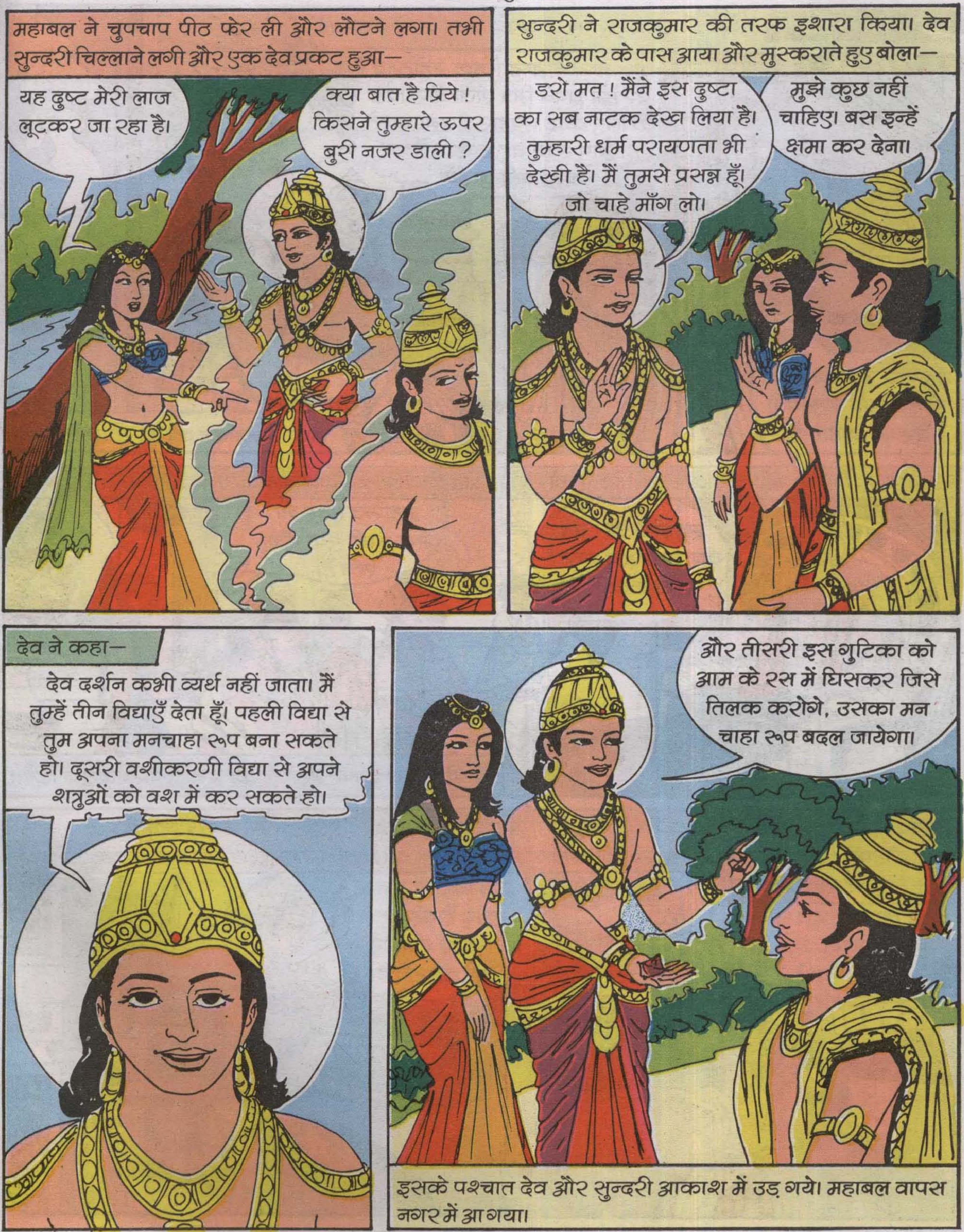

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकुमारी जाग रही थी। उसने स्वागत किया—
आइये कुमार ! आपका स्वागत है।
राजकुमारी के कक्ष में कोई है। मुझे पता करना चाहिए।
राजकुमारी ! तुम्हारा पवित्र प्रेम मुझे यहाँ ले आया
राजकुमारी ने प्रणय निवेदन किया—
मैंने आपको अपना सर्वत्र समर्पण कर दिया है। अब गंधर्व विवाह करके मुझे अपने साथ ले चलिए। यह लक्ष्मीपुंज हार आपके गले में डालकर आपको अपना पति स्वीकार करती हूँ।
उसने दिव्य हार महाबल के गले में डाल दिया।
कनकमाला ने सोचा—
हे भगवान ! राजकुमारी विवाह कर रही है। आज मौका है। अपनी सौत और उसकी लड़की से पुराना बदला चुका लूँ।
उसने तुरन्त जाकर महाराज को जगाया।
महाराज ! जल्दी उठिये। राजकुमारी के कमरे में कोई पुरुष है।
हैं ! ये आप क्या कह रही हैं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

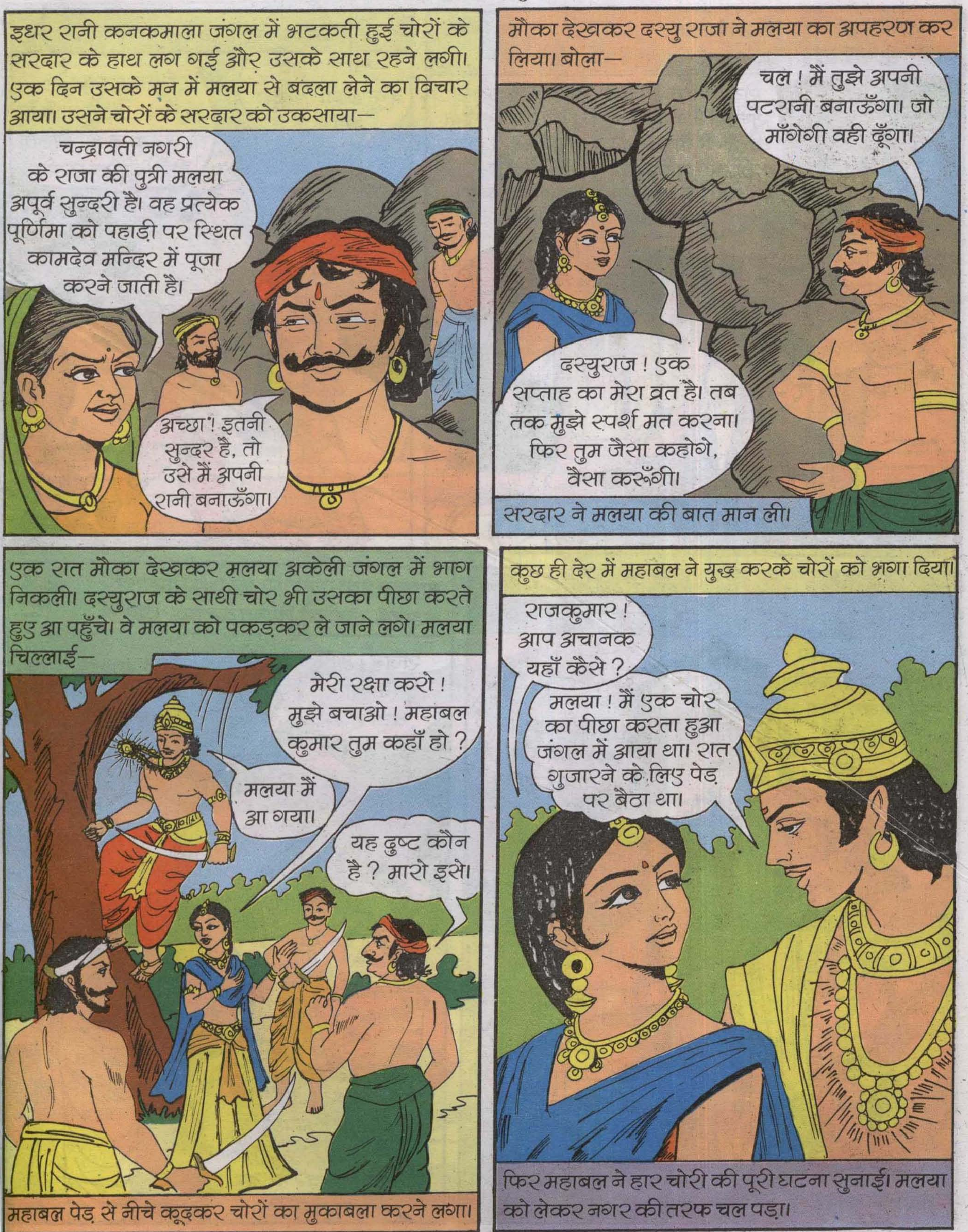
इधर रानी कनकमाला जंगल में भटकती हुई चोरों के सरदार के हाथ लग गई और उसके साथ रहने लगी। एक दिन उसके मन में मलया से बदला लेने का विचार आया। उसने चोरों के सरदार को उकसाया—
चन्द्रावती नगरी के राजा की पुत्री मलया अपूर्व सुन्दरी है। वह प्रत्येक पूर्णिमा को पहाड़ी पर स्थित कामदेव मन्दिर में पूजा करने जाती है।
अच्छा! इतनी सुन्दर है, तो उसे मैं अपनी रानी बनाऊँगा।
मौका देखकर दस्यु राजा ने मलया का अपहरण कर लिया। बोला—
चल! मैं तुझे अपनी पटरानी बनाऊँगा। जो माँगेगी वही दूँगा।
दस्युराज! एक सप्ताह का मेरा व्रत है। तब तक मुझे स्पर्श मत करना। फिर तुम जैसा कहोगे, वैसा करूँगी।
सरदार ने मलया की बात मान ली।
एक रात मौका देखकर मलया अकेली जंगल में भाग निकली। दस्युराज के साथी चोर भी उसका पीछा करते हुए आ पहुँचे। वे मलया को पकड़कर ले जाने लगे। मलया चिल्लाई—
मेरी रक्षा करो! मुझे बचाओ! महाबल कुमार तुम कहाँ हो?
मलया मैं आ गया।
यह दुष्ट कौन है? मारो इसे।
महाबल पेड़ से नीचे कूदकर चोरों का मुकाबला करने लगा।
कुछ ही देर में महाबल ने युद्ध करके चोरों को भगा दिया।
राजकुमार! आप अचानक यहाँ कैसे?
मलया! मैं एक चोर का पीछा करता हुआ जंगल में आया था। रात गुजारने के लिए पेड़ पर बैठा था।
फिर महाबल ने हार चोरी की पूरी घटना सुनाई। मलया को लेकर नगर की तरफ चल पड़ा।

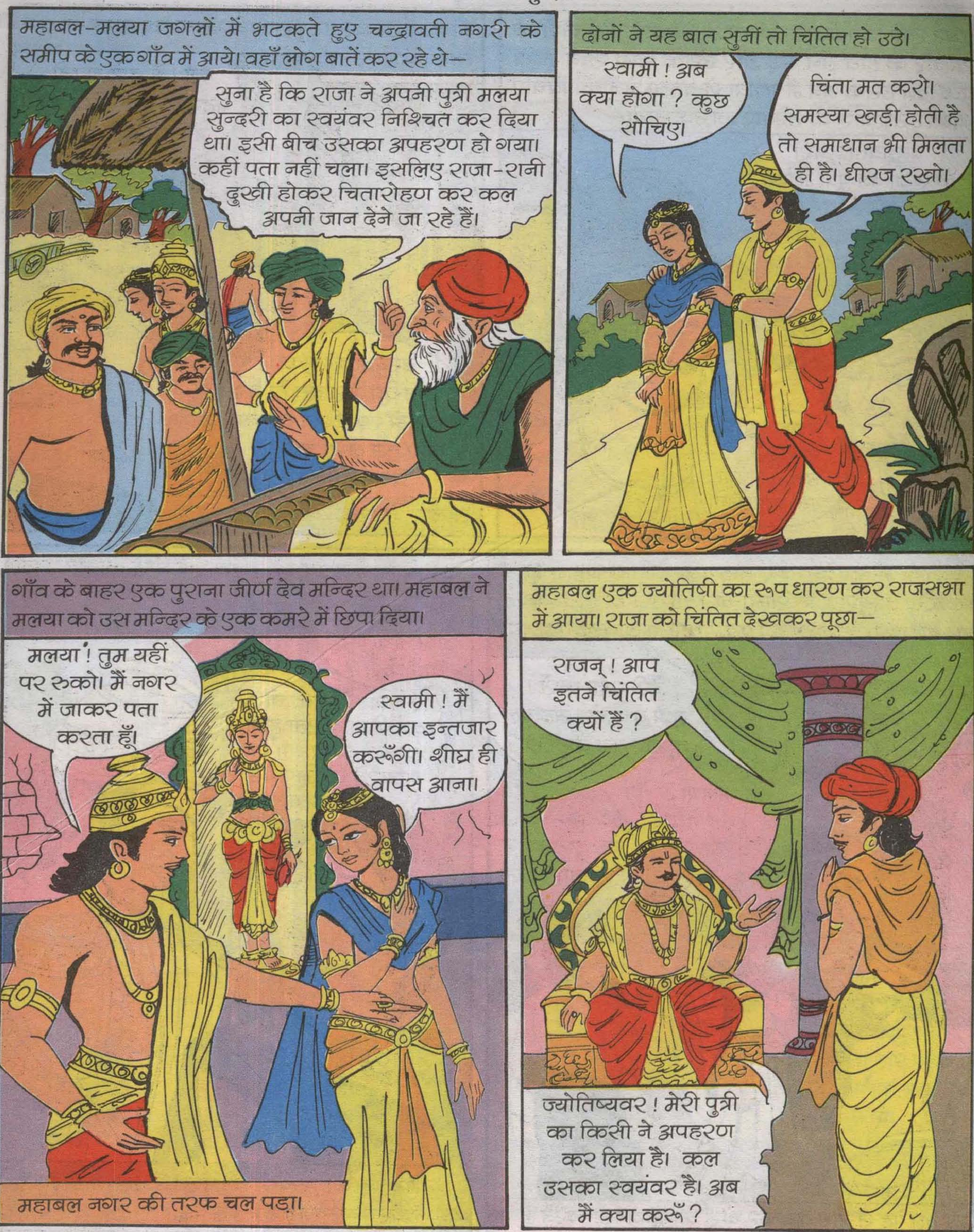

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

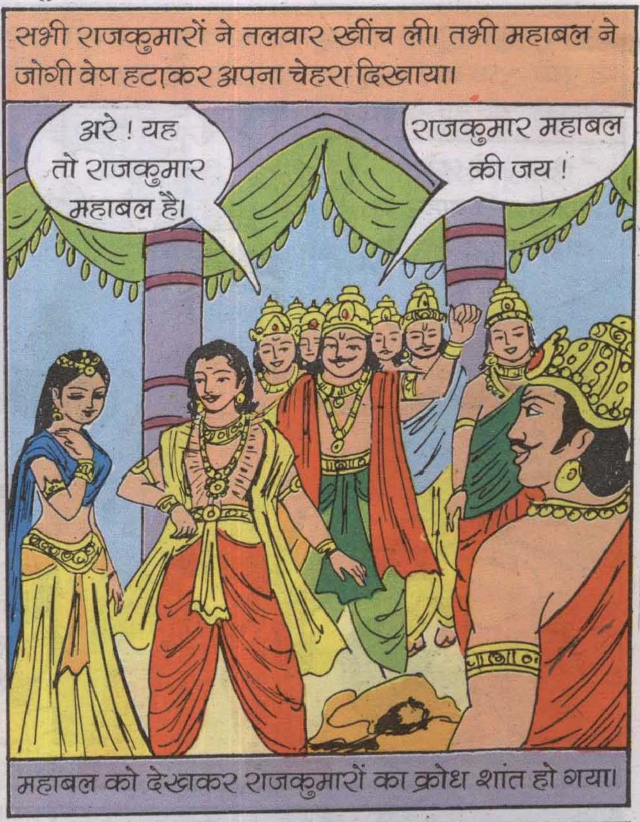

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

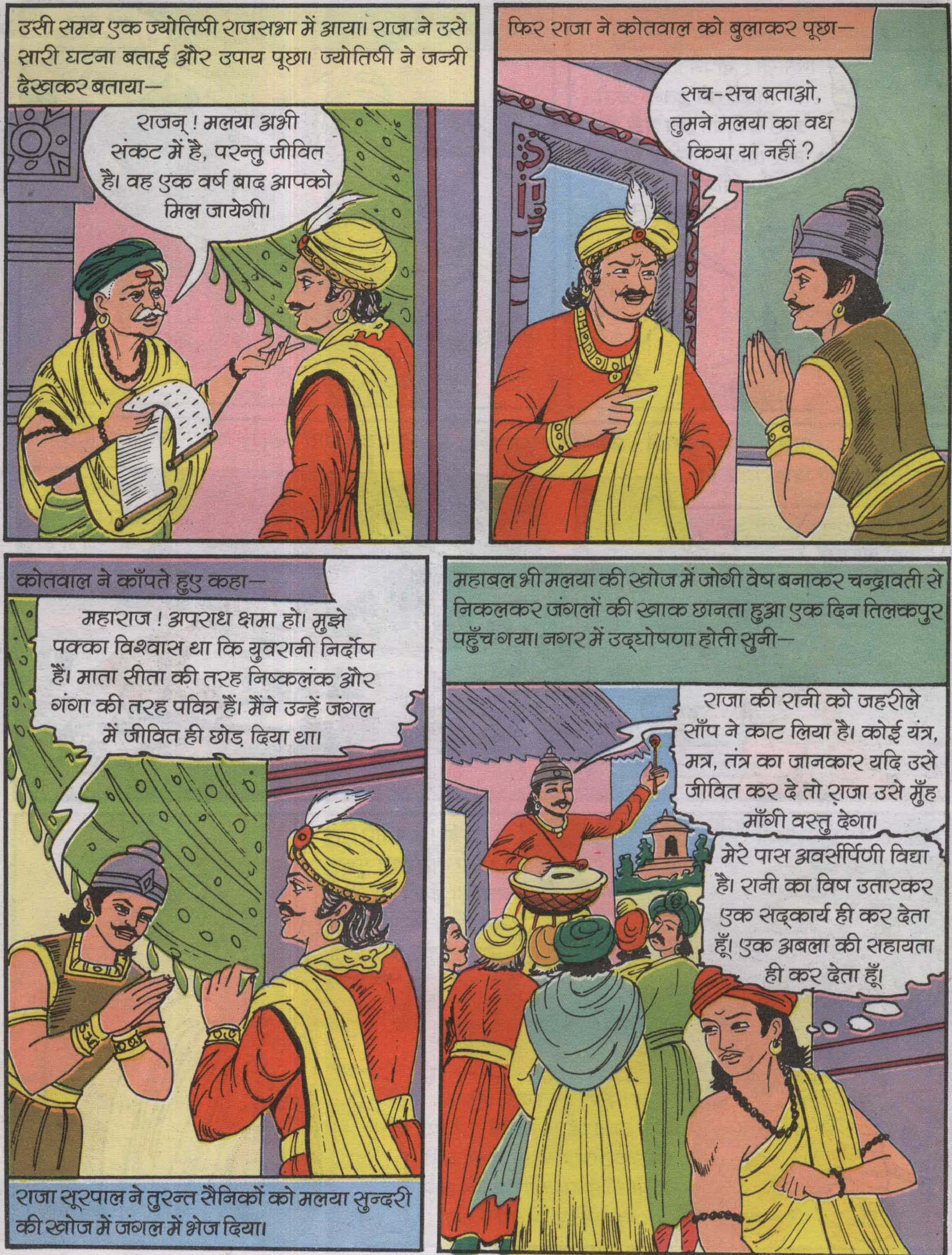

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

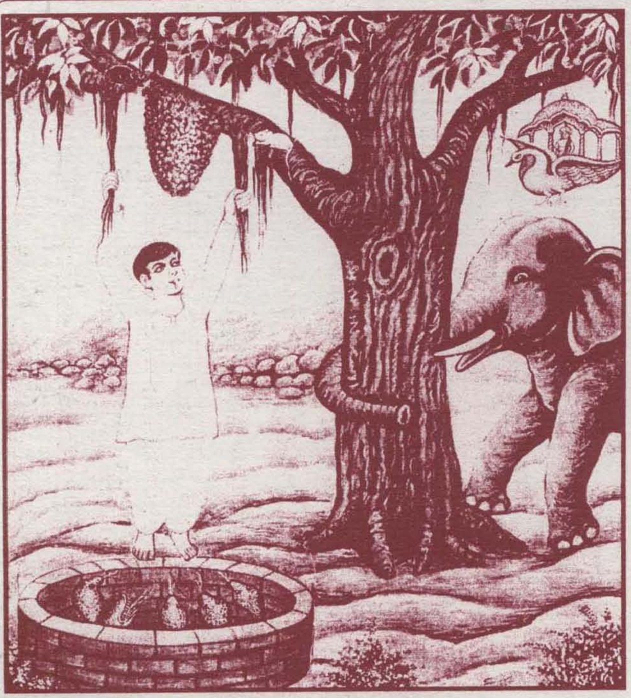

मधु बिन्दु के समान है काम-भोग

काम-भोग (इन्द्रिय सम्बन्धी विषय-सुख) भोगने के समय तो सुखकारी लगते हैं, परन्तु उनके अनुराग (मोह) में आसक्त होने वाला जीव अन्त में दुःख, क्लेश और पीड़ा को प्राप्त करता है।

काम-भोगों की असारता तथा क्षणभर के सुख के बदले दीर्घकालीन दुःखों की परम्परा बताने के लिए आचार्यों ने मधु बिन्दु का दृष्टान्त दिया है।

एक युवक बहुत वर्षों तक परदेश में रहकर व्यापार करता रहा। बहुत-सा धन कमाकर वह अपने नगर को जा रहा था। लम्बा रास्ता पैदल पार करता हुआ युवक एक घने लम्बे जंगल में फंस गया। छोटे संकरे रास्ते में सामने एक भयानक काला जंगली हाथी मिल गया। युवक हाथी से डरकर वापस जंगल की ओर भागने लगा। हाथी भी उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। अपनी जान बचाने के लिए वह एक घने पेड़ के ऊपर चढ़ गया। पीछा करता हुआ हाथी आ पहुँचा। युवक ऊँची टहनी पर बैठा था। क्रोध में आकर हाथी उस वृक्ष के तने को सूंड़ से हिला-हिलाकर गिराने की चेष्टा करने लगा। वृक्ष जोर से हिला तो युवक के हाथों की पकड़ ढीली पड़ गई। डाली से हाथ छूटा, वह नीचे गिरने लगा। भाग्य से उसके हाथ में वृक्ष की नीचे लम्बी लटकती दो टहनियाँ (शाखाएँ) आ गई। जहाँ वह लटका, उसके ठीक ऊपर मधुमक्खियों का छत्ता था। उससे बूँद-बूँद शहद (मधु) टपक रहा था। शहद की बूँद उसके मुँह में गिरी, उसे बड़ा सकून मिला। वृक्ष पर सफेद और काला दो चूहे भी बैठे थे। एक तरफ एक काला तथा दूसरी तरफ सफेद चूहा उन्हीं दोनों टहनियों को कुतर-कुतर काटने लग गये। युवक जहाँ लटका था उसके ठीक नीचे एक पुराना सूखा कुआँ था। उसके भीतर जहरीले सांप छुपे थे। ऊपर लटके युवक को देखकर वे भी उसके नीचे गिरने का इंतजार करते फुंफकार रहे थे।

उसी समय एक विद्याधर उधर से निकला। युवक को मौत के बीच फंसा देखकर उसे दया आ गई। उसने विमान रोका और युवक को पुकारा—"वत्स! देख तेरे चारों तरफ मौत मुँह बाँए खड़ी है। ले, मैं विमान तेरे पास ला रहा हूँ। तू इसमें बैठ जा। मैं तुझे सुरक्षित अपने स्थान पर पहुँचा दूँगा।"

युवक बोला—"हे दयालु पुरुष! एक मिनट रुक जाओ। शहद की एक बूँद और चाट लूँ। बहुत मीठा है यह मधु!" विद्याधर ने उसे समझाया—"मधु का लोभ छोड़, अपने चारों तरफ खड़ी मौत को देख और आ जा इस विमान में।"

"एक मिनट! एक बूँद और।" इस तरह करते हुए युवक मधु बिन्दु का लोभ नहीं छोड़ सका। थक-हार कर विद्याधर आगे अपने रास्ते चला गया।

उपनय : यह संसार ही वृक्षरूप मानव जीवन है। इनमें काल (मौत) रूपी हाथी है। काला चूहा रात, सफेद चूहा दिन का प्रतीक है। जो जीवन की डाली को हर क्षण काटे जा रहे हैं। कूएँ नरक आदि दुर्गति हैं और मधु बिन्दु के समान संसार के क्षणिक विषय-सुख हैं। विद्याधर के समान सद्गुरु हैं, जो उसे दुःखों से बचाने के लिए धर्म रूपी विमान लेकर खड़े हैं। परन्तु मोह-मूढ़ जीव (युवक) संसार के सुखों का स्वाद नहीं छोड़ रहा है। सद्गुरु की चेतावनी भी उसे बचा नहीं सकती।

साभार : सुशील सद्बोध शतक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

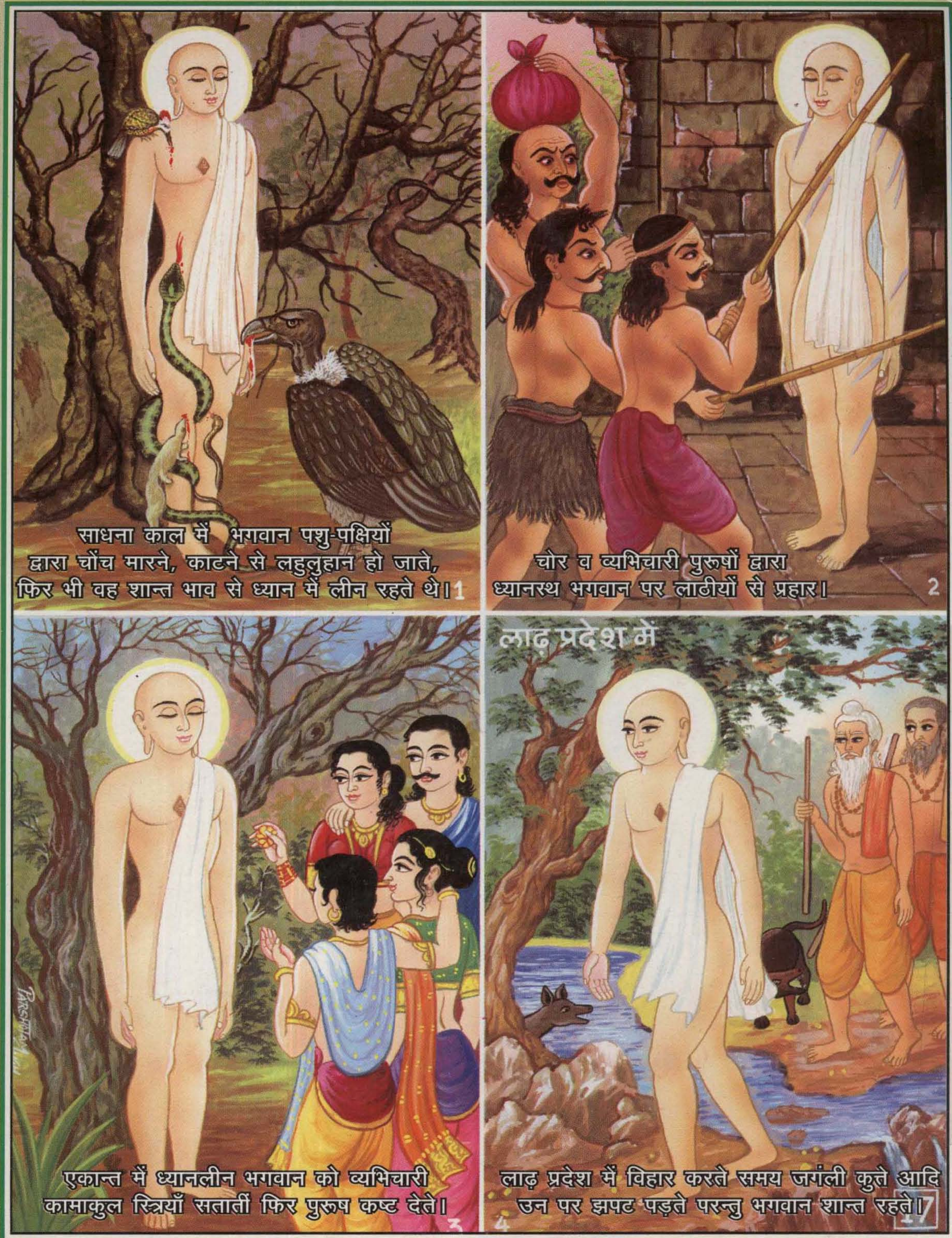

भगवान महावीर की साधना काल में होने वाले अनेक उपसर्गों का वर्णन आचारागं सूत्र के नौवें अध्ययन में किया गया है। उसी आधार पर यह चित्र बनाया गया है।

आभार—यह चित्र प्रवर्तक श्री अमरमुनि जी द्वारा सम्पादित सचित्र आचारांग-सूत्र पुस्तक से लिया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org